Sem II
दर्शनशास्त्र (Core IV)
पाश्चात्य दर्शन

Kumar Madhusudan
Dept of Philosophy

A. रेने देकार्त (Rene Descartes) बुद्धिवादी Rationalist

संदेह की विधि Method of doubt

देकार्त को आधुनिक दर्शन का नहीं, वरन् आधुनिक दार्शनिक प्रणाली का पिता (father of modern method) मानते है। क्योंकि देकार्त ने ही सर्वप्रथम दर्शन के क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रणाली (scientific method) को जन्म दिया।

देकार्त का दार्शनिक विचार संदेह से प्रारम्भ होता है। देकार्त के अनुसार संदेह ही सत्य प्राप्ति का साधन, मार्ग या उपाय है। संदेह के बिना सत्य का ज्ञान संभव नहीं। इसी कारण देकार्त संदेह से प्रारम्भ करते है। उनका कहना है कि हमें आज तक जो भी ज्ञान प्राप्त हुआ है वह प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इन्द्रियों के माध्यम से ही प्राप्त हुआ है। परन्तु हमारी इन्द्रियां हमें कभी-कभी धोखा दे देती है।

संदेह के माध्यम से ही निस्संदेह सत्य की उपलब्धि सम्भव है। सत्य का स्वरूप संदेह के बिना नहीं जाना जा सकता है। अतः संदेह ही सत्य का मार्ग है, संशय ही ज्ञान का स्रोत है। यही देकार्त की संदेह विधि (method of doubt) है। यह संदेह पद्धति एक सर्वथा नयी प्रणाली है। इसी कारण उन्हें इस प्रणाली का पिता मानते है।

देकार्त ने सत्य की प्राप्ति के लिए संदेह की पद्धति को अपनाया, अतः उनकी पद्धति को संदेह पद्धति (method of doubt) कहते है। उनके अनुसार सत्य साध्य है तथा संदेह साधन है। देकार्त परीक्षा के बिना किसी सत्य को नहीं स्वीकार करते है। विश्वास के लिये ज्ञान की आवश्यकता है। अतः देकार्त के मत में ज्ञान का उद्गम संदेह है।

देकार्त ने संदेह को ही सत्य का माध्यम स्वीकार किया है। निस्संदेह सत्य तभी प्राप्त हो सकता है, जब हम सभी मान्यताओं को संदेहात्मक दृष्टि से परीक्षा करें।

देकार्त ने संदेह को ही सत्य का माध्यम स्वीकार किया है। निस्संदेह

Scanned with CamScanner

सत्य तभी प्राप्त हो सकता है, जब हम सभी मान्यताओं को संदेहात्मक दृष्टि से परीक्षा करे। इसी को ध्यान में रख कर देकार्त का कहना है कि हमें सत्य-प्राप्ति के लिए परम्परागत मान्यताओं से अपने को पूरी तरह अलग करना है। जिससे हमें निश्चित सत्य की प्राप्ति हो। परीक्षित सत्य ही-निश्चित सत्य माना जा सकता है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि देकार्त ने एक नयी दार्शनिक पद्धति की खोज की जिसे संदेहात्मक पद्धति (method of doubt) कहते हैं। देकार्त के अनुसार संशय ही ज्ञान का स्रोत है।

देकार्त संदेह से कैसे प्रारम्भ करते हैं। संदेह से प्रज्ञाजन्य निसंदेह स्वयं-सिद्ध ज्ञान की प्राप्ति कैसे होती है प्रज्ञा-जन्य आधार वाक्यों से अन्य वाक्यों की सत्यता का अनुमान कैसे करते हैं। अपनी संदेह पद्धति से ही देकार्त विचार प्रारम्भ करते हैं। अभी तक मैं जिसे सर्वथा सत्य और निश्चयात्मक मानता आया हूँ वह ज्ञान मुझे या तो इन्द्रियों से साक्षात मिला है या इन्द्रियों के द्वारा। परन्तु मुझे इन्द्रियों ने कई बार धोखा दिया है और बुद्धिमानी इसी में है कि जो एक बार धोखा दे जाय उसका पूरा विश्वास कभी न किया जाय। कुछ बातों में इन्द्रियां भले ही धोखा दे जाय किन्तु बहुत सी बातें ऐसी हैं जिसमें इन्द्रियां धोखा नहीं दे सकती।

देकार्त संपूर्ण जगत तथा जागतिक पदार्थों को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। हो सकता है कि सारा जगत ही भ्रम हो। जगत का कर्ता ईश्वर भी भ्रम ही हो।

देकार्त ने संदेह क्रिया से ही संदेह कर्ता की सत्ता को स्वतः सिद्ध माना है। यदि संदेहकर्ता (आत्मा) की सत्ता में भी संदेह किया जाय तो संदेह निराधार होगा। तात्पर्य यह है कि आत्मा की सत्ता ज्ञान की पूर्वमान्यता है। पाश्चात्य और प्राच्य प्रायः सभी दार्शनिक इसे स्वीकार करते हैं। संत ऑगस्टाईन का कहना है 'यदि मैं अपना निराकरण भी करूं तो भी मेरी (आत्मा की) सत्ता अनिवार्य है। कैम्पानेला के अनुसार मेरे ज्ञाता होने से ही मेरी सत्ता स्वतः सिद्ध है। काण्ट के अनुसार आत्मा को नित्य माने बिना संवेदनाओं से ज्ञान की उत्पत्ति नहीं। पाश्चात्य दार्शनिकों की यह दृष्टि भारतीय विचारकों के सन्निकट है। श्री शंकराचार्य का कहना है कि आत्मा का निराकरण भी आत्मा को सत्य माने बिना संभव नहीं। तात्पर्य यह है कि निराकरण भी सद्वस्तु का हो सकता है। जिसका भाव नहीं उसका

अभाव भी असिद्ध है। इसी प्रकार न्याय वैशेषिक में आत्मा को ज्ञान का अधिकरण स्वीकार किया गया है। आत्मा के अभाव में ज्ञान निराश्रय तथा निराधार होगा। इस प्रकार दोनों परम्पराओं के अनुसार आत्मा को ज्ञान की पूर्व मान्यता है।

देकार्त की दार्शनिक पद्धति के चार प्रमुख नियम हैं, जिनका उल्लेख उसने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ दार्शनिक पद्धति पर विमर्श (Discourse on method) में किया है। ये नियम निम्नलिखित हैं।

A. (1) प्रथम नियम के अनुसार किसी चीज को तब तक सत्य नहीं मानना चाहिए, जब तक उसका प्रामाणिक ज्ञान न हो जाय। किसी चीज का प्रमाणिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें उतावलेपन (जल्दबाजी) से मुक्त होना चाहिए। केवल स्पष्ट ज्ञान और विवेकपूर्ण ज्ञान को ही प्रमाणिक मानना चाहिए। डेकार्त के अनुसार स्पष्टता और विवेकपूर्णता ही किसी ज्ञान के सत्यता की कसौटियाँ हो सकती हैं।

A. (2) द्वितीय नियम के अनुसार, हमें जिस जटिल समस्या पर विचार करना है, उसका विश्लेषण करना चाहिए। विचारणीय समस्या का विश्लेषण तब तक करना चाहिए, जब तक उसके सरल अंश प्राप्त न हो जायें। जब विचारणीय समस्या का सरल अंश स्पष्ट और विवेकपूर्ण रूप में अभिव्यक्त हो जाता है, तो वह समस्या अविश्लेष्य हो जाती है। दूसरे शब्दों में, समस्या के विश्लेषण का लक्ष्य उसके मूल तत्वों की जानकारी प्राप्त करना होता है।

A. (3) तृतीय नियम के अनुसार, विचारणीय समस्या के समाधान पर व्यवस्थित ढंग से विचार किया जाता है। हम सरलता से कठिनता से बढ़ते हुए क्रम में विश्लेष्य समस्या को प्रस्तुत करते हैं। सबसे पहले समस्या के सरल और मूल तत्वों को रखते हैं। उसके बाद धीरे-धीरे अपेक्षाकृत कुछ अधिक क्लिष्ट तत्वों पर विचार किया जाता है।

A. (4) चतुर्थ नियम पूर्वोक्त नियमों का सर्वेक्षण परीक्षण और मूल्यांकन है। इसके द्वारा अपने किये गये आकलन का आलोचनात्मक सर्वेक्षण किया जाता है।

Scanned with CamScanner